B.A. Part – I
Philosophy Paper - 02

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

तत्वमीमांसीय सिद्धान्त के रूप में अनेकवाद

(भाग - I)

अनेकवाद मूलतत्व की संख्या विषयक वह सिद्धान्त है जो विश्व के मूल तत्व की संख्या को एक या दो नहीं बल्कि अनेक मानता है। इस सिद्धान्त की मान्यता है कि विश्व के मूल में अनेक तत्व विद्यमान है और वे सभी परमार्थ है। इस अनेकता का परिहार नहीं किया जा सकता है क्योंकि सभी का अपना - अपना व्यक्तित्व है, अपने अस्तित्व के लिए सभी अपने ही उत्तरदायी है।

हम पाते है कि अनेकवाद संख्यात्मक एकवाद का विरोधी सिद्धान्त है क्योंकि जहाँ अनेकवाद विश्व की संख्यात्मक अनेकता को प्रतिपादित करता है, वही संख्यात्मक एकवाद विश्व की संख्यात्मक एकता को स्वीकार करता है।

हम पाते है कि मूल तत्व की संख्या को अनेक मानने के बाद मूल तत्व की प्रकृति के सम्बन्ध में उनके विचारों में भिन्नता है। अतः अनेकवाद के विभिन्न रूप हो जाते है जो निम्न प्रकार है—

(1) सर्वांगीन अनेकवाद
(2) भौतिकवादी अनेकवाद

(3) प्रत्ययवादी अनेकवाद

(4). अनुभयवादी अनेकवाद।

अनेकवाद के इन्हीं रूपों पर हम पश्चिमी और भारतीय दर्शनों के अनुसार प्रकाश डालेंगे।

पश्चिमी अनेकवाद (1) सर्वांगीन अनेकवाद का अभाव- सर्वांगीन अनेकवाद मूल तत्व की प्रकृति और संख्या दोनों को अनेक मानता है। हम पाते हैं कि ~~प्रकृति और संख्या~~ दोनों पश्चिमी दर्शन में इस तरह के सिद्धान्त का अभाव है।

(2) भौतिकवादी अनेकवाद — इस सिद्धान्त के अनुसार मूल तत्व की संख्या अनेक है, किन्तु प्रकृति केवल भौतिक अर्थात् एक तरह की है। इस सिद्धान्त के समर्थक दर्शन के इतिहास में प्राचीनकाल से लेकर आज तक मिलते हैं। प्राचीनकाल में एम्पेडाक्लस, डेमोक्राइटस, एपीक्यूरस एवं आधुनिक युग में डाल्टन आदि विचारक इस सिद्धान्त के समर्थक हैं।

(3) प्रत्ययवादी अनेकवाद — इस सिद्धान्त के अनुसार मूल तत्व संख्या में अनेक और प्रकृति में आध्यात्मिक है। विश्व के मूल में एक नहीं बल्कि अनेक आध्यात्मिक तत्व विद्यमान है। इस सिद्धान्त का स्पष्ट रूप हावीसन (C.G.H. Howison) मैक्टेगार्ट (J.M.E. McTaggart) एवं औंशिक रूप में लाइबनित्स के दर्शन में मिलता है। हावीसन के अनुसार परम सत्ता अनेक पुरुषों, व्यक्तियों या आत्माओं का समूह है। सभी पुरुष एक दूसरे से स्वतन्त्र है। विश्व एक ही आदर्श से अनुप्राणित अनेक पुरुषों का समूह है जिसके सदस्य परस्पर सम्बद्ध होते हुए भी अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं।

इसी प्रकार मैक्टेगार्ट के अनुसार मूल तत्व अनेक आत्माओं की समष्टि है और आत्माओं की अनेकता परमार्थ है उनका अन्तर्भाव किसी इकाई में नहीं हो सकता। मैक्टेगार्ट के अनुसार विश्व और आत्मा में अवयवी और अवयव का सम्बन्ध है। विश्व अवयवी एवं आत्मा अवयव है। यहाँ अवयवी अपने अवयवों पर निर्भर करता है क्योंकि उन्हीं के संघात से बना है परन्तु अवयव अपने अवयवी पर निर्भर नहीं करता है।

लाइबनित्स भी प्रत्ययवादी अनेकवाद के समर्थक इसलिए कहे जा सकते हैं क्योंकि लाइबनित्स के अनुसार मूल तत्व चिद्बिन्दु है जो संख्या में अनेक एवं सृष्टि में आध्यात्मिक है किन्तु चिद् बिन्दुओं में विकासगत भेद है कोई कम और कोई अधिक विकसित है और अन्त में वे सबसे विकसित चिद् बिन्दु को ईश्वर की संज्ञा देते हैं जो संख्या में एक है।

अतः लाइबनित्स को पूर्णतः प्रत्ययवादी अनेकवादी नहीं कहा जा सकता है।

— To be continued —